साहित्याकाश

रचनाकारों का ...

Sahityaakash
Rachnakaroan Ka ...

संपादिका
डॉ. कालिंदी बृजेश त्रिपाठी

संपादिका

सह - संपादन

डॉ. मुन्ना लाल देवदास • डॉ. बी. लक्ष्मी
डॉ. आशुतोष • अवुसुला श्रीनिवासा चारी
हेमराज निषाद • सौजन्या आरवेटी
सिरसिल्ला गफूर शिक्षक • डॉ. बी. तिरुमला देवी

सह - संपादन

सृष्टि ... 160
डा. इसरार मोहम्मद ख़ान..161
शेर सिंह हुँकार ... 162
रजिया सुल्तान ... 163
के कृष्णा कुमारी ... 164
प्रो. एन. शान्ति कोकिला...165
वी एन वी पद्मावती ... 167
के. रामचंदर ... 168
रामेश्वरी सी. के. जलहरे...169
विभा पाण्डेय ... 170
हरिराम साव ... 171
नीलाब्धि सामंतराय ... 172
सुषमा खजूरिया ... 173
श्री घनश्याम सिंग साहू...174
चन्द्रहास सेन ... 179
पद्मनी साहू ... 181
राजेन्द्र कुमार साहू ... 182
छाया दोन्दलकर ... 183
कल्पना दोन्दलकर ... 184
दिनेश कमलेकर 'विनीत'...185
शान्तप्पा चराल ... 186
रामनरेश शर्मा "शिक्षक" ... 187
अरुण मोहन एम. आर ... 188
जगदीश कश्यप ... 189
श्रीमती पुष्पा शर्मा ... 192
पुरुषोत्तम सोनी "मतंग" ... 193
सुजन विश्वास ... 195
अरविन्द अकेला ... 196
श्रीमती चंदा भूपेंद्र "चेतना" ... 197
जितेश्वरी साहू 'सचेता' ... 198
श्रीमती नीलिमा डेहरिया ... 199
प्रमोद वर्मा ... 200
ओमप्रकाश द्विवेदी ओम ... 201
कवि हरिदास अठया ... 202
मोहम्मद मुन्नी ... 203
Mohammed Zulfekhar ... 204
जयंती मिश्रा ... 205
Abdulrazak Aralimatti ... 211
Pooja Chaudhary 'Tosh'... 212
సమీవుల్లాఖాన్ ... 214

कहानी/Stories

डॉ. बी. लक्ष्मी - *नारी तुम हादसे का अंकुर* ... 217
बी सुगना कुमारी - *घर के सामने शेर आया* ... 220
सूरिसेट्टी निर्मला - *एक औरत* ... 229
गीतिका सक्सेना - *एलाऊ* ... 239
दिनेश कमलेकर 'विनीत' - *जीतना बड़ा आसान है* ... 240
हेमंती साहु - *आपका उपेक्षित* ... 241
पी. पांडुरंग राव - *बौद्ध त्यौहार*

दो लघु कविताएँ

मिट जाने से पहले..

मिट जाने से पहले,
खुद को इक बार जी लूं,
कि सात रंगों से तेरे
अपना आसमां भी रंग लूं।।

मिट जाने से पहले,
खुद को इक बार जी लूं,
कि गीत बनकर मैं,
हवा के संग लहराऊँ।।

मिट जाने से पहले,
खुद को इक बार जी लूं,
कि मिट्टी बनने से पहले,
उसकी खुशबू को छू जाऊँ।।

और मिट जाने के बाद,
खुद को इक बार फिर जी लूं,
कि बारिश की बूंदें बन,
नदियों में बह जाऊँ।।

इक बात बता..

जिंदगी तू
इक बात बता,
कहाँ है मेरी मंजिल
कहाँ मेरा पता?

मुझ मुसाफिर से भी
ज़रा दोस्ती कर लो,
बना लो हमसफ़र
दिखा दो रास्ता।।

सृष्टि
83740 42514